उच्च शिक्षित विद्यार्थियों के जीवन में सोशल मीडिया का शैक्षिक उद्देश्यों हेतु प्रभावः एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

आशा राजपूत
शोधार्थी,
शिक्षा संकाय
लॉर्ड्स विश्वविद्यालय, अलवर
rsrajput98981@gmail.com

डॉ. सविता गुप्ता
शोध पर्यवेक्षक,
शिक्षा संकाय,
लॉर्ड्स विश्वविद्यालय, अलवर

सारांश

वर्तमान डिजिटल युग में सोशल मीडिया केवल मनोरंजन का साधन नहीं रह गया है, बल्कि यह उच्च शिक्षा के क्षेत्र में एक शक्तिशाली उपकरण के रूप में उभरा है। यह शोध पत्र इस बात का विश्लेषण करता है कि उच्च शिक्षित विद्यार्थी (स्नातक एवं स्नातकोत्तर) अपने शैक्षणिक उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए सोशल मीडिया प्लेटफॉर्मों (जैसे: YouTube, LinkedIn, Telegram, ResearchGate) का उपयोग कैसे करते हैं। यह शोध पत्र यह दर्शाता है कि जहाँ सोशल मीडिया सूचना के आदान–प्रदान और कौशल विकास में सहायक है, वहीं इसके अत्यधिक उपयोग से ध्यान भटकने जैसी चुनौतियाँ भी उत्पन्न होती हैं।

मुख्य शब्दः *डिजिटल युग, सोशल मीडिया, उच्च शिक्षा, शैक्षणिक, प्लेटफॉर्मों*

1. प्रस्तावना

उच्च शिक्षा के स्तर पर शोध, नेटवर्किंग और सूचना प्राप्ति के लिए सोशल मीडिया अनिवार्य होता जा रहा है। वेब 2.0 तकनीक के आगमन के बाद, छात्रों के बीच सूचना साझा करने का तरीका पूरी तरह बदल गया है। फेसबुक, व्हाट्सएप, यूट्यूब और अकादमिक प्लेटफॉर्म्स ने सीखने की सीमाओं को कक्षा के चार दीवारों से बाहर निकाल दिया है। शैक्षणिक उत्पादकता को बढ़ाने के लिए अब गूगल ड्राइव, एवरनोट और ड्रॉपबॉक्स जैसे डिजिटल टूल्स का व्यापक उपयोग हो रहा है। ये प्लेटफॉर्म छात्रों और शिक्षकों को एक साझा मंच प्रदान करते हैं जहाँ वे किसी भी प्रोजेक्ट पर मिलकर काम कर सकते हैं। इसकी सबसे बड़ी खूबी यह है कि इसमें फाइलों को तुरंत साझा किया जा सकता है और किसी भी कार्य पर वास्तविक समय में प्रतिक्रिया दी जा सकती है।

2. साहित्य की समीक्षा

मोनिया ओडेरा और इनाम अबूसाबेर (2021) ने सऊदी अरब के यूनिवर्सिटी छात्रों के बीच सोशल नेटवर्किंग के लाभ और कमियों पर विस्तृत अध्ययन किया। 270 उत्तरदाताओं के सर्वेक्षण पर आधारित इस शोध में इंटरनेट पर बिताए गए समय और शैक्षणिक परिणामों के बीच संबंध को दर्शाया गया। शोध का

सुझाव है कि यदि सोशल मीडिया का सही और अनुशासित तरीके से उपयोग किया जाए, तो यह छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धियों को बढ़ाने में सहायक हो सकता है।

टी. एर्दोगन और आई. मुस्तफा (2019) के अध्ययन में हाई स्कूल के विद्यार्थियों की सोशल मीडिया आदतों की जांच की गई। निष्कर्षों से पता चला कि छात्र सबसे ज्यादा यूट्यूब और फेसबुक का इस्तेमाल करते हैं। इसके उपयोग के मुख्य कारणों में सूचनाओं का आदान–प्रदान, राय साझा करना, दस्तावेज भेजना और मनोरंजन शामिल हैं। शोध में यह भी पाया गया कि सोशल मीडिया के उपयोग के तरीके पर जेंडर (लिंग) का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। अधिकांश छात्र अपने स्मार्टफोन के माध्यम से प्रतिदिन तीन घंटे से अधिक समय इन प्लेटफॉर्म्स पर बिताते हैं।

विनर चाविंगा (2017) के शोध पत्र में यह देखा गया कि सोशल मीडिया शिक्षण और सीखने की प्रक्रिया को कैसे सुगम बनाता है। स्नातक स्तर के दो पाठ्यक्रमों में ट्विटर और ब्लॉग्स को शामिल किया गया। अध्ययन में पाया गया कि ये प्लेटफॉर्म 'छात्र–केंद्रित शिक्षा' को बढ़ावा देने में उत्प्रेरक का काम करते हैं। छात्र 24 घंटे किसी भी समय पाठ्यक्रम सामग्री साझा करने और आपस में चर्चा करने में सक्षम थे। हालांकि, इंटरनेट डेटा की उच्च लागत, खराब वाई–फाई और कंप्यूटरों की कमी जैसी कुछ तकनीकी बाधाएं भी सामने आईं।

3. शोध के उद्देश्य

- उच्च शिक्षा में सोशल मीडिया के उपयोग के स्वरूप को समझना।
- शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति में इसकी प्रभावशीलता का आकलन करना।
- सोशल मीडिया के उपयोग से उत्पन्न होने वाली शैक्षिक बाधाओं की पहचान करना।

4. शोध पद्धति

इस शोध पत्र के लिए 'वर्णनात्मक शोध पद्धति' का उपयोग किया गया है। माध्यमिक डेटा (पुस्तकों, जर्नल्स और इंटरनेट लेखों) के साथ–साथ प्राथमिक डेटा के रूप में उच्च शिक्षण संस्थानों के 100 विद्यार्थियों से ऑनलाइन सर्वेक्षण के माध्यम से जानकारी एकत्रित की गई।

5. सोशल मीडिया के शैक्षिक लाभ

- **सहयोगात्मक अधिगम**

व्हाट्सएप और टेलीग्राम जैसे प्लेटफॉर्म्स के माध्यम से समूह चर्चा और नोट्स साझा करना आसान हो गया है।

- **सूचनाओं की सुलभता**

  YouTube और शैक्षिक चौनल्स जटिल विषयों को समझने में सहायक हैं।

- **पेशेवर नेटवर्किंग**

  LinkedIn जैसे प्लेटफॉर्म विद्यार्थियों को उद्योग के विशेषज्ञों और शोधकर्ताओं से सीधे जोड़ते हैं।

- **संसाधन साझाकरण**

  ResearchGate और Academia.edu जैसे प्लेटफॉर्म शोध पत्रों तक निःशुल्क पहुँच प्रदान करते हैं।

6. चुनौतियाँ एवं नकारात्मक प्रभाव

- **समय का अपव्यय**

  अनियंत्रित उपयोग से अध्ययन की एकाग्रता में कमी आती है।

- **गलत सूचना**

  सोशल मीडिया पर उपलब्ध हर जानकारी प्रामाणिक नहीं होती, जिससे गलत अवधारणाएं विकसित हो सकती हैं।

- **ध्यान भटकाव**

  नोटिफिकेशन और अंतहीन फीड छात्रों की उत्पादकता को प्रभावित करते हैं।

- **साइबर बुलिंग एवं स्वास्थ्य**

  मानसिक तनाव और नींद की कमी भी एक महत्वपूर्ण समस्या के रूप में देखी गई है।

7. चर्चा और विश्लेषण

विश्लेषण से पता चलता है कि उच्च शिक्षित विद्यार्थी सोशल मीडिया को 'सूचना के संकलन' के लिए बेहतर मानते हैं, लेकिन 'गहन अध्ययन' के लिए अभी भी पारंपरिक पुस्तकों को प्राथमिकता देते हैं। जो छात्र इसे एक उपकरण के रूप में अनुशासित तरीके से उपयोग करते हैं, वे अकादमिक रूप से अधिक सफलता प्राप्त करते हैं।

8. सुझाव

- **डिजिटल साक्षरता**

उच्च शिक्षण संस्थानों में छात्रों को सोशल मीडिया के प्रभावी और सुरक्षित उपयोग हेतु कार्यशालाएं आयोजित करनी चाहिए।

- **अनुशासित उपयोग**
  छात्रों को 'डिजिटल टाइम मैनेजमेंट' का अभ्यास करना चाहिए।
- **स्रोतों की प्रमाणिकता**
  छात्रों को सोशल मीडिया पर प्राप्त जानकारी की पुष्टि आधिकारिक शैक्षणिक जर्नल्स से करनी चाहिए।

9. निष्कर्ष

सोशल मीडिया उच्च शिक्षा के क्षेत्र में दोधारी तलवार की तरह है। यदि इसका उपयोग सचेत रूप से शैक्षिक उद्देश्यों के लिए किया जाए, तो यह सीखने की प्रक्रिया को गति प्रदान कर सकता है। उच्च शिक्षित विद्यार्थियों के लिए सोशल मीडिया का उपयोग 'सूचना के उपभोग' से बढ़कर 'सूचना के सृजन' की दिशा में होना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ

- *राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) – डिजिटल संसाधनों का एकीकरण*
- *अग्रवाल, सुनील, एवं गीतांजलि नायडू. "सोशल नेटवर्किंग साइट्स का चेन्नई एवं कोयंबटूर के कॉलेज छात्रों के अंत:वैयक्तिक संबंधों पर प्रभाव का अध्ययन." शोध लेख, 2019.*
- *कब्बूर, महाकालेश्वर एस. एवं सावित्री के. "मोबाइल और इंटरनेट आधारित प्रौद्योगिकी का विद्यार्थियों की शिक्षा पर प्रभाव." संगोष्ठी पत्र, 2 मार्च 2019.*
- *जेसुदासन, राज ए. "युवाओं की जीवन शैली पर सामाजिक मीडिया के प्रभाव." अकादमिक जर्नल, 2018.*